P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-5* August-2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

दिल्ली में प्रवासी तथा समस्याएं : बिहारी महिलाओं के विशेष संदर्भ में

Migrants and Problems in Delhi: with Special Reference to Bihari Women

Paper Submission: 15/08/2021, Date of Acceptance: 25/08/2021, Date of Publication: 26/08/2021

ज्योति
पोस्ट डोक्टोरल फ़ेलो
राजनीति विज्ञान विभाग,
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई. सी.एस. एस. आर.),
नई दिल्ली, भारत

सारांश

प्रवास परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है **(नोटोस्टीयन : 1945 : 36-37)**। जब व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किन्हीं कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाता है तथा वहीं पर रहना प्रारंभ कर देता है तो इस प्रक्रिया को प्रवास तथा व्यक्तियों को प्रवासी कहा जाता है। आंतरिक प्रवासी भारत की शहरी आबादी का तकरीबन एक तिहाई हिस्सा है और उनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। महिला प्रवासियों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। । बेहतर आर्थिक अवसर, अधिक नौकरियां और बेहतर जीवन का वादा अक्सर लोगों को नए स्थानों पर खींचता है। दिल्ली में भी प्रवास हुआ है तथा लगातार जारी है। यहां पर बिहार राज्य से भी काफ़ी संख्या में प्रवास हुआ है। वर्तमान समय में निरंतर परिवर्तित होते समय में शहरों तथा महानगरों की ओर प्रवास में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। 309 करोड़ आंतरिक प्रवासियों में से 70.7 प्रतिशत महिलाएं हैं (218 करोड़) (भारतीय जनगणना : 2001)। प्रवासी होने के कारण महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह लेख प्रवासी महिलाओं की समस्याओं तथा समस्या - समाधान को स्पष्ट करता है।

Migration is an integral part of the wider process of change (Notostean: 1945: 36-37). When a person or group of persons moves from one place to another due to any reason and starts living there, then this process is called migration and persons are called migrant. Internal migrants constitute about a third of India's urban population and their numbers are increasing continuously. The number of female migrants is also increasing continuously. The promise of better economic opportunities, more jobs and a better life often draws people to new places. Migration has also happened in Delhi and continues continuously. There has also been a large number of migration from the state of Bihar here. In the present times, there has been an unprecedented increase in migration towards cities and metros in the ever-changing times. Of the 309 crore internal migrants, 70.7 percent are women (218 crore) (Census of India: 2001). Being a migrant, women have to face many problems. This article clarifies the problems and problem-solutions of migrant women of bihar in delhi.

मुख्य शब्द / Keywords: प्रवास प्रवासी महिलाएं दिल्ली बिहार समस्याएं समाधान प्रयास ।
Migration,Migrants,Women,Delhi, Bihar, Solutions,Problems,Efforts.

प्रस्तावना

प्रवास एक निरंतर चलने वाली बहुआयामी प्रक्रिया है। इसमें अग्रिम अवसरों को प्राप्त करने की आशा के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर लोगों की आवाजाही शामिल है। शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार, प्रवास एक व्यक्ति या व्यक्ति के समूह द्वारा एक स्थान से स्थानांतरित करने के लिए किया गया तर्कसंगत निर्णय है। किसी क्षेत्र विशेष के उपेक्षित समूहों के द्वारा सर्वाधिक प्रवास किया जाता है। किसी क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियां, रोजगार के समुचित अवसर, शैक्षणिक व स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं, सुरक्षा, मानवीय अधिकार एवं बेहतर पारिस्थितिक दशाओं आदि से प्रवास विशेष रूप से प्रभावित होता है।

प्रस्तुत लेख में बिहार की महिलाओं द्वारा महानगर दिल्ली में प्रवास करने के कारण,

समस्याएं, समस्याओं को दूर करने के प्रयासों आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि बिहारी महिलाओं में किस आयु-वर्ग की कितने प्रतिशत महिलाएं दिल्ली में प्रवासी जीवन व्यतीत कर रही हैं। बिहार के वो कौन से जिले हैं जहां से वे दिल्ली में आई हैं।

प्रवास की अवधारणा

प्रवास को प्रतिकर्ष (पुश) कारक एवं अपकर्ष (पुल) कारक सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। प्रतिकर्ष कारक वे हैं जो व्यक्ति को स्वेच्छा से स्थानांतरित करने के लिए मजबूर करते हैं, और कई मामलों में, उन्हें मजबूर किया जाता है। पुश कारकों में संघर्ष, सूखा, अकाल या अत्यधिक धार्मिक गतिविधियां शामिल हो सकती है। अपकर्ष कारक वे हैं जो अपना घर छोड़ने के लिए व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को आकर्षित करते हैं। उन कारकों को स्थान उपयोगिता के रूप में जाना जाता है, जो एक जगह की वांछनीयता है तथा जो लोगों को आकर्षित करती है। प्रवासन का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यह प्रवासियों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्तरों को भी प्रभावित करता है (गुप्ता : 2017)। बेहतर आर्थिक अवसर, अधिक नौकरियां और बेहतर जीवन का वादा अक्सर लोगों को नए स्थानों पर खींचता है। रोजगार की ऊंची दर, अधिक धन कमाने की इच्छा, अच्छी सेवाएं, स्वास्थ्यवर्द्धक पर्यावरण, स्थान का सुरक्षित होना, जुर्म की कम दर या जुर्म का न होना, राजनीतिक स्थिरता, अधिक उपजाउ भूमी, प्राकृतिक आपदाओं के होने की कम संभावना आदि लोगों को आकर्षित करते हैं ।

दिल्ली में भी प्रवास हुआ है तथा लगातार जारी है। यहां पर बिहार राज्य से भी काफ़ी संख्या में प्रवास हुआ है। वर्तमान समय में निरंतर परिवर्तित होते समय में शहरों तथा महानगरों की ओर प्रवास में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। महिला प्रवास को आमतौर पर भारत में निष्क्रिय और साहचर्य के रूप में देखा जाता है (सिंह : 1986)

दिल्ली की कुल जनसंख्या में प्रवासी जनसंख्या का प्रतिशत

भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच, महाराष्ट्र के बाद दिल्ली एन. सी. आर. का प्रवास की दृष्टि से दूसरा स्थान है। केंद्र शासित प्रदेशों में दिल्ली का प्रथम स्थान है। यहां शिक्षा तथा रोजगार की सुविधाएं अधिक हैं (भगत : 2010)। यहां प्रति व्यक्ति आय और आय वृद्धि अधिक है। यही कारण है कि यहां अधिक प्रवासी आते हैं। जनगणना 2001 की निम्नांकित सारणी दिल्ली में निवास करने वाले प्रवासियों के प्रतिशत को पूर्ण रूप से स्पष्ट करती है।

सारणी संख्या -1 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली : कुल प्रवासी जनसंख्या का जिलेवार प्रतिशत, 2001

दिल्ली के जिले	कुल जनसं. का %	कुल जनसं. में प्रवासी जनसं. का %
उत्तर-पश्चिम	20.65	20.54
दक्षिण	**16.37**	**18.60**
दक्षिण-पश्चिम	12.67	18.60
पश्चिमी	**15.37**	**15.76**
उत्तर-पूर्व	**12.77**	**11.81**
पूर्वी	10.57	9.86
उत्तरी	5.64	4.24
केंद्रीय	4.67	2.46
नई दिल्ली	1.29	1.58

स्त्रोत : कंप्यूटिड फ़्रोम डी 2 माईग्रेशन टेबल ऑफ़ एन. सी. टी. ऑफ़ दिल्ली, सेंसिस ऑफ़ इंडिया, 2001

दिल्ली में महिला प्रवासियों का प्रतिशत

दिल्ली के लगभग प्रत्येक जिले में प्रवासी महिलाओं का विस्तार है। यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जा रहा है। निम्न सारणी इस विषय को और भी स्पष्ट कर देती है।

सारणी संख्या- 2 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली : पुरुष-महिला प्रवास, 2001

जिले	पुरुष (%)	महिला (%)
उत्तर-पश्चिमी	54.5	**45.5**
उत्तरी	56.4	**43.6**
उत्तर-पूर्वी	54.7	**45.3**
पूर्वी	55.4	**44.6**
नई दिल्ली	56.7	**43.3**
केंद्रीय	57.9	**42.1**
पश्चिमी	56.0	**44.0**
दक्षिण-पश्चिम	54.3	**45.7**
दक्षिणी	57.1	**42.9**

स्त्रोतः डी. 2, प्रवास सारणी, एन. सी. टी. दिल्ली, सेंसिस ऑफ़ इंडिया, 2001

सन 2001 की जनगणना आंकड़ों से स्पष्ट है कि दिल्ली में प्रवासियों की एक बड़ी संख्या निवास करती है। यह संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। लगभग प्रत्येक जिले में प्रवासी बहुतायत में निवास करते हैं। यदि महिला प्रवासियों के प्रतिशत पर दृष्टि डाली जाए तो यह प्रतिशत भी कम नहीं है।

दिल्ली में निवास करने वाली बिहार की महिला प्रवासियों से संबंधित शोध-क्षेत्र तथा शोध-पद्धति

यह लेख दिल्ली में निवास करने वाली बिहार की महिलाओं के संदर्भ में प्रवास को स्पष्ट करने का एक प्रयास है। प्रस्तुत लेख में दिल्ली में मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में निवास करने वाली बिहार की प्रवासी महिलाओं को उत्तरदाताओं के रूप में लिया गया है। उत्तरदाताओं की कुल संख्या 200 है। दिल्ली के ये तीन क्षेत्र हैं मैदानगढ़ी, शाहदरा तथा पंजाबी बाग। मैदानगढ़ी से कुल 80, शाहदरा से कुल 40 तथा पंजाबी बाग से कुल 80 प्रवासी महिलाओं को उत्तरदाताओं के रूप में शामिल किया गया है। शाहदरा दिल्ली के उत्तर-पूर्वी दिल्ली जिले का एक उप मंडल है। पंजाबी बाग दिल्ली के पश्चिम जिले का एक उप मंडल है। जबकि मैदानगढ़ी दिल्ली के दक्षिण जिले में स्थित है। शोध क्षेत्र के रूप में इन तीन क्षेत्रों के चुनाव का मुख्य कारण यह है कि यहां पर काफ़ी संख्या में बिहार से आने वाली महिलाएं प्रवासी के रूप में निवास करती हैं।

अतः स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के रूप में दिल्ली के जिन तीन मैदानगढ़ी, शाहदरा तथा पंजाबी बाग क्षेत्रों का चयन किया गया है वह पूर्ण रूप से तर्कसंगत है। शोध क्षेत्रों का चयन करने के लिए स्थानीय निवासियों, जानकारों तथा शोध निदेशक से भी सलाह ली गई है। इसके साथ ही इंटरनेट सेवा की सहायता भी ली गई है। शोध पद्दति के रूप में शोध क्षेत्र में जाकर 200 उत्तरदाताओं से उनके आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न प्रश्नों को पूछा गया तथा प्रश्नावली में उत्तरों को लिखा गया है।

बिहार के जिले जहां से प्रवास किया गया है

वर्तमान समय में बिहार में कुल 38 जिले हैं। जिनमें से 27 जिलों से दिल्ली के शोध क्षेत्रों में प्रवास किया गया है। ये 27 जिले हैं; अररिया, अरवल, बांका, कटिहार, खगड़िया, गया, गोपालगंज, दरभंगा, नवादा, नालंदा, पटना, पूर्णिया, पूर्वी चंपारण, बेगुसराय, भागलपुर, मधुबनी, मधेपुरा, मुंगेर, मुजफ़्फ़रपुर, रोहतास, लखीसराय, वैशाली, समस्तीपुर, सहरसा, सारन, सीतामढ़ी, सीवान। निम्न सारणी से यह स्पष्ट हो जाता है

सारणी संख्या 3 बिहार के जिले जहां से शोध क्षेत्रों में प्रवास किया गया है

(कुल उत्तरदाता 200)

क्रं.सं०	जिले	उत्तरदा०(%)	क्रं. सं०	जिले	उत्तरदा०सं०(%)
1	अररिया	6 (3)	15	भागलपुर	10 (5)
2	अरवल	1 (0.5)	16	मधुबनी	18 (9)
3	बांका	1 (0.5)	17	मधेपुरा	3 (1.5)
4	कटिहार	1 (0.5)	18	मुंगेर	21(10.5)
5	खगड़िया	2 (1)	19	मुजफ़्फ़रपुर	4 (2)
6	गया	7 (3.5)	20	रोहतास	2 (1)
7	गोपालगंज	4 (2)	21	लखीसराय	1 (0.5)
8	दरभंगा	13 (6.5)	22	वैशाली	11 (5.5)
9	नवादा	1 (0.5)	23	समस्तीपुर	6 (3)
10	नालंदा	8 (4)	24	सहरसा	4 (2)
11	पटना	21 (10.5)	25	सारन	10 (5)
12	पूर्णिया	1 (0.5)	26	सीतामढ़ी	30 (15)
13	पू०चंपारण	3 (1.5)	27	सीवान	7 (3.5)
14	बेगुसराय	4 (2)			
		कुल		प्रतिशत	(100%)

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी से स्पष्ट है कि बिहार के कुल 38 जिलों में से 27 जिले ऐसे हैं जहां से बिहारी महिलाएं प्रवास करके दिल्ली में आई हैं। सारणी से स्पष्ट है कि, सर्वाधिक प्रवास सीतामढ़ी (15%) जिले से हुआ है तथा सबसे कम प्रवास अरवल, बांका, कटिहार, नवादा, पूर्णिया तथा लखीसराय (सबमें 1-1%) से हुआ है। सीतामढ़ी के पश्चात पटना तथा मुंगेर (10.5%) जिलों का स्थान दूसरा है। जहां से सर्वाधिक महिला प्रवासियों का आगमन दिल्ली में हुआ है।

प्रवास के मुख्य कारण

वर्तमान समय में दिल्ली में बिहारी महिलाओं द्वारा काफ़ी बड़ी संख्या में प्रवास किया जा रहा है। बिहारी महिलाओं के दिल्ली में प्रवास का मुख्य कारण विवाह है। अधिकांश महिलाओं के पति विवाह से पहले ही दिल्ली में कार्यरत थे। इसलिए महिलाओं को भी उनके साथ प्रवास करके दिल्ली आना पड़ा (महापात्रा : 2010, 2003) ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े शहरों में भूमिहीन मजदूरों तथा सीमांत किसानों का प्रवास दशकों से जारी हैं। ये अकुशल और अप्रशिक्षित प्रवासी छोटे शहरों को छोड़ देते हैं और शहरी आजीविका के लिए अग्रणी आजीविका की तलाश में बड़े शहरों मे पहुंचते हैं। अत: महिलाओं को भी इनके साथ प्रवास करना पड़ता है (मुखर्जी : 1991)। यदि तीनों शोध क्षेत्रों मैदानगढ़ी, शाहदरा तथा पंजाबी बाग पर दृष्टि डाली जाए तो यहां पर बिहार से महिला प्रवास के कारणों का जो प्रतिशत निकलकर आया है उसे निम्न सारणी के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है:-

सारणी संख्या 4 प्रवास के मुख्य कारण : मैदानगढ़ी (80)

कारण	उ.दा. की सं.	प्रतिशत
शादी	61	76.25
रोजगार	13	16.25
पूर्वज यही हैं	6	7.5
जन्म	0	0
अन्य कारण	0	0
कुल	80	100%

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या-5 प्रवास के मुख्य कारण : शाहदरा (40)

कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
शादी	37	92.5
रोजगार	0	0
पूर्वज यही हैं	3	7.5
जन्म	0	0
अन्य कारण	0	0
कुल	40	100%

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या (6) प्रवास के मुख्य कारण : पंजाबी बाग (80)

कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
शादी	56	70
रोजगार	7	8.75
पूर्वज यही हैं	14	17.5
जन्म	1	1.25
अन्य कारण	2	2.5
कुल	80	100%

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या-7 प्रवास के मुख्य कारण तीनो क्षेत्रों में कुल उत्तरदाता (200)

कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	%
शादी	154	77
रोजगार	20	10
पूर्वज यही हैं	23	11.5
जन्म	1	0.5
अन्य कारण	2	1
कुल	200	100%

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

निम्नलिखित चार्ट के द्वारा इस स्थिति को और भी अच्छे ढ़ंग से स्पष्ट किया जा सकता है।

चार्ट संख्या (1)

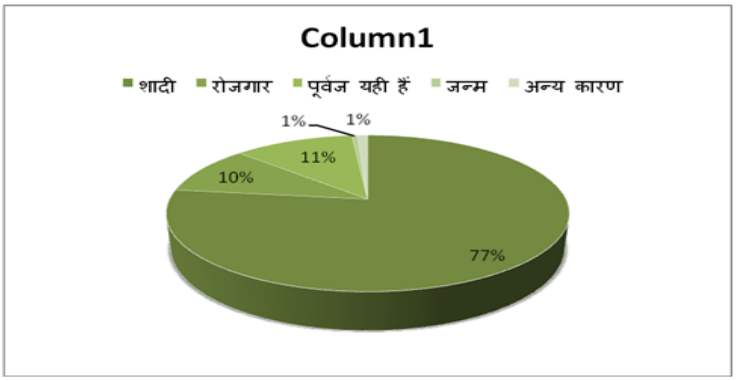

उपरोक्त सारणियों तथा चार्ट से स्पष्ट है कि, दिल्ली में बिहारी महिलाओं के प्रवास का मुख्य कारण विवाह (77%) है। दूसरा कारण यह है कि पूर्वज यहीं रहते हैं (11.5%), तीसरा कारण रोजगार (10%) है, जन्म (0.5%) भी कारण है तथा अन्य कारणों का प्रतिशत 1% है।

प्रवासी महिला - वर्ग

शोध क्षेत्रों में प्रवासी महिलाओं को निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है:-

सारणी संख्या -8 महिला – वर्ग : मैदानगढ़ी (80)

वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	%
घरेलु	57	71.25
कामकाजी	23	28.75
विद्यार्थी	0	0
कुल उ०दात०	80	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या -9 महिला – वर्ग : शाहदरा (40)

वर्ग	उत्तरदाताओं की सं.	%
घरेलु	17	42.5
कामकाजी	22	55
विद्यार्थी	1	2.5
कुल उत्तरदाता	40	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या -10 महिला – वर्ग : पंजाबी बाग (40)

वर्ग	उत्तरदाताओं की सं.	%
घरेलु	46	57.5
कामकाजी	30	37.5
विद्यार्थी	4	5
कुल उत्तरदाता	80	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी संख्या- 11 महिला – वर्ग तीनो क्षेत्रों में कुल उत्तरदाता (200)

वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	%
घरेलु	120	60
कामकाजी	75	37.5
विद्यार्थी	5	2.5
कुल उ.दा.	200	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणियों से स्पष्ट है कि बिहारी प्रवासी महिलाओं में से सर्वाधिक घरेलु महिलाएं मैदानगढ़ी (71.25%) में हैं तथा सबसे कम शाहदरा (42.5%) जबकि पंजाबी बाग (57.5%) में यह मध्य में है। कामकाजी महिलाओं का सर्वाधिक प्रतिशत शाहदरा (55%) में तथा सबसे कम मैदानगढ़ी (28.75%) में है।

चार्ट संख्या (2)

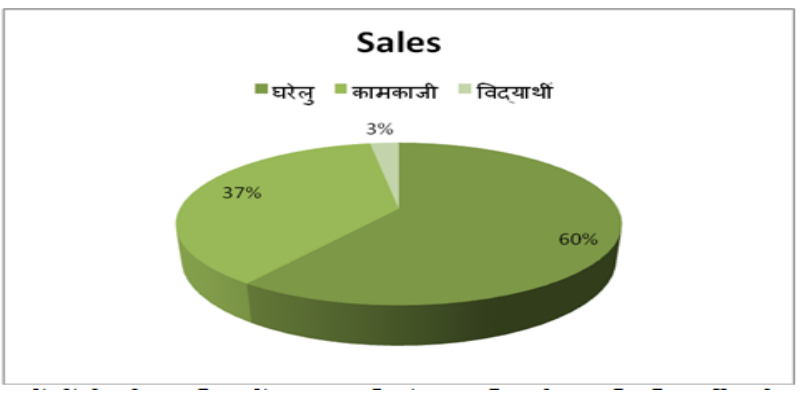

कुल उत्तरदाताओं में से घरेलु महिलाओं (60%) की संख्या अधिक है। जबकि विद्यार्थी वर्ग का

सबसे कम प्रतिशत (2.5%) है।

महिलाएं तथा आयु वर्ग

सारणी संख्या- 12 आयु वर्ग कुल उत्तरदाता (200)

वर्ग	संख्या	%
15-20	14	7
21-30	86	43
31-40	60	30
41-50	24	12
51-60	13	6.5
61-70	02	1
71-80	01	0.5
कुल	200	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणियों तथा निम्न चार्ट से यह स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है।

चार्ट संख्या (3)

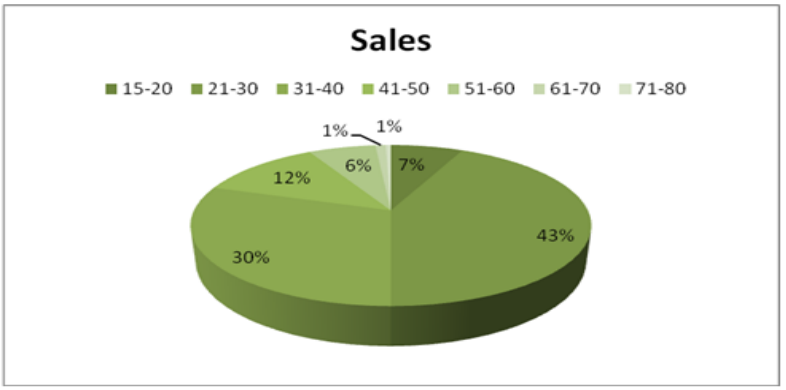

उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक आयु-वर्ग 21-30 वर्ग समूह (43%) की महिलाओं का है। दूसरे स्थान पर 31-40 (30%)आयु वर्ग की प्रवासी महिलाएं दिल्ली में निवासी हैं जबकि सर्वाधिक कम संख्या में 71-80 (0.5%) आयु वर्ग की महिलाएं निवास कर रही हैं।

प्रवासी महिलाओं की समस्याएं

यदि समस्याओं पर प्रकाश डाला जाए तो दिल्ली में प्रवासी महिलाओं के सम्मुख सर्वप्रमुख समस्या निरंतर बढ़ती महंगाई, बिजली, पानी तथा किराए की है। इसके अतिरिक्त ये महिलाएं बेहतर रोजगार प्राप्त करने की भी इचछा रखती हैं। जो महिलाएं घर पर रहती हैं वे चाहती हैं कि उन्हें एक अच्छा रोजगार मिले। रोजगार बढ़ने से प्रवासियों के जीवन में सामाजिक व मनौवैज्ञानिक संतुष्टि बढ़ जाती है, जबकि बेरोजगारी में विचलन कम होने से जीवन की संतुष्टि में काफी कमी आती है (बारटन : 2011)। इस विषय में उनकी घर पर रहकर सिलाई, कढ़ाई, पापड़ बनाने, अचार बनाने, पैकिंग करना, अगरबत्ती बनाने जैसे कार्यों में रूची है। इसके अतिरिक्त कोई भी करने योग्य कार्य जिसे वे घर पर रहकर कर सकें, करना चाहती हैं। इसके लिए वे सरकार से यह उम्मीद रखती हैं कि सरकार इस दिशा में उनके लिए अवश्य ही कोई कार्य करे। किंतु महिलाओं का एक बड़ा भाग ऐसा भी है जिनका भरोसा सरकार से उठ चुका है। जो महिलाएं घर से बाहर निकल कर काम करती हैं वे अधिकांश दूसरों के घर में साफ़-सफ़ाई, खाना पकाना जैसे छोटे-मोटे कार्य करती हैं जिनके बदले में उन्हें पारिश्रमिक भी बहुत ही कम मिलता है। एक घर

में काम करने के लगभग एक महीनें में लगभग 1000-2000 रु. तक मिलते हैं। दो-तीन घरों में काम करके ये महिलाएं लगभग 4000-6000 रु. महीने तक अर्जित कर पाती हैं। उनके लिए छुट्टियों की कोई व्यवस्था नहीं होती है। उन्हें सुबह-शाम दोनों समय का काम करना पड़ता है। जो महिलाएं घर पर रह कर कार्य कर रही हैं उन्हें भी पारिश्रमिक बहुत ही कम मिलताहै। प्रवासी दोनों पुरुष तथा महिलाएं शहरों में अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं, जैसे कि बंदरगाहों पर, फेरीवाले के रूप में, घरेलू नौकर, निर्माण श्रमिक तथा राजमिस्त्री आदि (मुखर्जी : 1991)। कुछ स्थानों पर सीवरेज की समस्या है तो कहीं कहीं उन्हें पानी के लिए मशक्कत करनी पड़ती है। पंजाबी बाग जैसे स्थान पर दिल्ली के मूल निवासियों द्वारा प्रवासी परिवारों के साथ भेदभाव होना तथा सहयोग न देने की समस्या भी सामने आई है। वहां के मूल निवासियों को इनके बिहारी होने से परहेज है। प्रवासी महिलाओं की बहुत ही कम संख्या है जो यह कहती है कि उन्हें दिल्ली में कोई भी समस्या नहीं है। इन समस्याओं का प्रतिशत निम्न सारणियों से स्पष्ट हो जाएगा:

सारणी संख्या- 13 कुल उत्तरदाता (200)

मुख्य समस्याएं	संख्या	%
महंगाई, बिजली, पानी, किराया	127	63.5
रोजगार	34	17
सीवरेज की समस्या	3	1.5
लोग सम्मान नहीं करते	2	1
कोई समस्या नहीं	34	17
कुल उत्तरदाता	200	100

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

चार्ट संख्या (4)

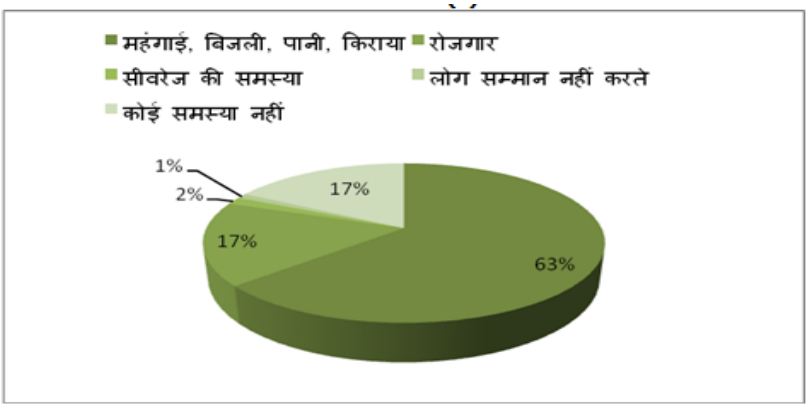

उपरोक्त चार्ट तथा सारणियों से स्पष्ट होता है कि, प्रवासी महिलाओं की समस्याओं का मुख्य कारण मंहगाई, बिजली, पानी तथा किराया है। दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली में निवासियों को 200 यूनिट तक बिजली मुफ़्त में दी जा रही है परंतु मकान मालिक किराएदारों से 10 रुपए यूनिट के हिसाब से वसूल रहे हैं। प्रतिवर्ष बढ़ता किराया तथा निरंतर बढ़ती मंहगाई से भी प्रवासी परेशान हैं। कम रोजगार मिलना या रोजगार के बदले में कम पैसों का मिलना तथा रोजगार का न मिलना प्रवासी महिलाओं के लिए एक और मुख्य समस्या है। अतिरिक्त शहरी क्षेत्रों में तेजी से शहरीकरण तथा उच्च मजदूरी का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर व्यक्तियों के प्रवास का कारण बनती है (वेंकटनारयना एवं नाइक : 2011)। प्रवास आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों के प्रति संवेदनशील होता है (सिंह, डी. पी. : 1998)। सीवरेज की समस्या भी शोध के दौरान सामने आई। महिलाओं को शौच के लिए आज भी घर से बाहर दूर जाना होता है। यह

समस्या पंजाबी बाग में झुग्गियों में रहने वाली एक बस्ती में देखने को मिली। यहां पर सरकार ने अस्थायी शौचालय मंगवाए थे किंतु वहां के मूल निवासियों ने उन्हें वहां पर रखने नहीं दिया क्योंके वे मूल निवासी जो कि बाल्मिकि समाज से संबंधित थे, वे उन प्रवासियों को किसी भी प्रकार का सहयोग देने के इच्छुक नहीं हैं। यही कारण है कि अन्य लोगों के द्वारा सम्मान न करना भी प्रवासी महिलाओं को ठेस पहुंचाता है। जबकि 17% महिलाओं को कोई भी समस्या नहीं है या फ़िर कहा जा सकता है कि उन्होंने परिस्थितियों के साथ समझौता करके जीना सीख लिया है। सामान्य तौर पर, जीवन के एक निचले स्तर पर भी बहुसंख्यकों की तुलना में प्रवासियों के बीच संतुष्टि देखी गई है (बाल्ट्स्क्यू : 2007, साफ़ी : 2010)

समाधान के प्रयास

विभिन्न प्रकार की समस्याओं के लिए उन महिलाओं के पास कोई भी प्रमुख समाधान का अभाव है। इनका शैक्षणिक स्तर भी काफ़ी कम है। अत: इन्हें अधिक जानकारी नहीं है। साक्षरता का न्यूनतम स्तर इसलिए अज्ञानता और पिछड़ेपन से बाहर निकलने के लिए लोगों की बुनियादी आवश्यकता के रूप में चिह्नित करता है (गोसाल : 1961) किंतु फ़िर भी कुछ महिलाएं आवाज़ उठाती हैं। नेताओं तक जाती हैं। ये अलग बात है कि इनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता (कुछ महिलाओं के अनुसार)। यह सत्य है कि महिलाओं को कानून आदि की इतनी जानकारी नहीं है। किंतु फ़िर भी ये महिलाएं कर्मठ हैं। ये मेहनत करके अपना जीवन यापन करने की हिम्मत रखती हैं। इनमें कार्य करने का जज़्बा पाया जाता है। ये सरकार से एक अच्छे रोजगार की उम्मीद रखती हैं। ये अपने आर्थिक सशक्तिकरण तथा स्वयं के बलबूते पर ही आगे बढ़ने की ओर प्रयासरत हैं।

सारणी सं. 14

समस्या समाधान के लिए किए जाने वाले प्रयासों की प्रतिशतता मैदानगढ़ी (80)

क्रं सं	वर्ग	उ.दा. की सं. (%)
1	कुछ नहीं कर सकते	42 (52.5)
2	किसी संस्था, संगठन या दफ़्तर में जाते हैं	4 (5)
3	कोई समस्या नहीं है	34 (42.5)
4	कुल	80 (100)

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

सारणी से स्पष्ट है कि, शोध क्षेत्र मैदानगढ़ी में 52.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि, वे चाहकर भी इन समस्याओं के समाधान के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि वे संस्था, संगठन या दफ़्तर में समस्या समाधान के लिए जाते हैं। जबकि 42.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि, उन्हें कोई भी समस्या नहीं है।

सारणी सं. 15

समस्या समाधान के लिए किए जाने वाले प्रयासों की प्रतिशतता शाहदरा (40)

क्रं सं	वर्ग	उ.दा. की सं. (%)
1	कुछ नहीं कर सकते	35 (87.5)
2	किसी संस्था, संगठन या दफ़्तर में जाते हैं	0
3	कोई समस्या नहीं है	5 (12.5)
4	कुल	40 (100)

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

शोध क्षेत्र शाहदरा में 87.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि, वे चाहकर भी इन समस्याओं के समाधान के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। यहां कोई भी उत्तरदाताअपनी समस्याओं को लेकर कहीं भी नहीं जाते हैं। क्योंकि उन्हें इस विषय में कोई जानकारी नहीं है। जबकि संस्था, संगठन या दफ़्तर में समस्या समाधान के लिए जाते हैं। जबकि 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि, उन्हें कोई भी समस्या नहीं है।

सारणी सं.16

समस्या समाधान के लिए किए जाने वाले प्रयासों की प्रतिशतता पंजाबी बाग (80)

क्रं सं	वर्ग	उ.दा. की सं. (%)
1	कुछ नहीं कर सकते	35 (43.75)
2	किसी संस्था, संगठन या दफ़्तर में जाते हैं	6 (7.5)
3	कोई समस्या नहीं है	39 (48.75)
4	कुल	80 (100)

स्त्रोत - शोधकर्त्ता द्वारा किया गया सर्वेक्षण

निष्कर्ष

अंत में, यह कहा जा सकता है कि, दिल्ली में प्रवासी जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है। यहां पर रोजगार के अवसर, शिक्षा आदि प्रवास को प्रभावित करते हैं। महिलाओं के संदर्भ में विवाह प्रवास का मुख्य कारण है। बिहार के अनेक जिलों से महिला प्रवास हुआ है। बिहार से दिल्ली में प्रवास करने वाली महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महंगाई, बिजली, पानी आदि समस्याएं मुख्य हैं। किंतु फ़िर भी बेहतर, जीवन - दशाएं यहां पर प्रवास को आकर्षित करती हैं। वे अपने अपने स्तर पर इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास भी करती हैं। इतना होने के बावजूद भी दिल्ली में प्रवासी महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि, प्रवासियों की इन समस्याओं का शीघ्र ही समाधान किया जाए। इसके लिए प्रवासियों, सरकार तथा स्थानीय लोगों सभी का सहयोग अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नोटोस्टीयन, एफ़. डब्ल्यू., पॉपुलेशन : द लोंग विय्, , व स्कुल्ट्ज, टी. डव्ल्यू., (ed.), फ़ेक्ट फ़ॉर द वर्ल्ड, 1945, यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, पेज - 36-37*
2. *भारतीय जनगणना, 2001*
3. *गुप्ता, प्रदिप्ता, 2017, माइग्रेशन फ्रॉम वेस्ट बंगाल टू नेशनल केपिटल टेरिट्री ऑफ़ दिल्ली, ए ज्योग्राफ़िकल स्ट्डी, पंजाब यूनिवर्सिटी*
4. *सिंह, जी. पी., 1986, पैटर्न्स ऑफ़ रूरल माग्रेशन इन इंडिया, न्यू दिल्ली:इंटर इंडिया*
5. *भगत, आर. बी., 2010, वाय काउंट इन द सेंसिस ऑफ़ 2011? इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली*
6. *माईग्रेशन टेबल ऑफ़ एन. सी. टी. ऑफ़ दिल्ली, सेंसिस ऑफ़ इंडिया, 2001 प्रवास सारणी, एन. सी. टी. दिल्ली, सेंसिस ऑफ़ इंडिया, 2001*
7. *महापात्रा, एस. आर. 2010 पैटर्न्स एंड डेटरमिनेन्ट्स ऑफ़ फ़ीमेल माइग्रेशन इन इंडिया : इन्साइट्स फ्रोम सेंसिस, वर्किंग पेपर : इंस्टीच्यूट फ़ॉर सोशल ए इकोनोमिक्स चेंज, बंगलौर*
8. *मुखर्जी, शेखर, 1991, द नेचर ऑफ़ माइग्रेशन एंड अर्बनाईज़ेशन इन इंडिया : द सर्च ऑफ़ अल्टरनेटिव प्लानिंग स्ट्रेटेजीज़, इन डाएनमिक्स ऑफ़ पोपुलेशन एंड फ़ैमिली वेलफ़ेयर,*
9. *श्रीनिवासन एंड पाठक (ed.) बॉम्बे, हिमालया पब्लिशिंग हाउस*

10. *बारट्रम, डी. 2011, इकोनोमिक माइग्रेशन एंड हैपिनेस : कम्पेयरिंग इम्मिग्रांट्स, एंड नेटिव्स हैपिनेस गेंस फ्रोम इंकम, सोशल इंडीकेटर रिसर्च, 103 (1), 57-76*
11. *वेंकटनारायण, एम. एस. नाइक, 2013, ग्रोथ एंड स्ट्रक्चर ऑफ़ वर्कफोर्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन*
12. *सिंह, डी. पी. 1998, इंटरनल माइग्रेशन इन इंडिया, 1961-1981, डेमोग्राफ़ी ऑफ़ इंडिया, 27(1): 245-261*
13. *बसलीवेंट, 2014 एंड एस. बलटाटेस्क्यू, 2007, सेंटरल एंड इस्टर्न माइग्रेशन सब्जेक्टिव क्वालिटी ऑफ़ लाईफ : ए कमपेरेटिव स्टडी, जरनल ऑफ़ आइडेंटिटी एंड माइग्रेशन स्टडीज, 1:67-81*
14. *साफ़ी, एम., 2010, इम्मीग्रांट्स लाईफ सेटिस्फेक्शन इन यूरोप : बिटवीन एसीमिलशन एंड डिस्क्रीमिनेशन, यूरोप सोशोलोजीकल रिव्यू, 26 (2):159-171*
15. *गोसाल, जी. एस., 1961, इंटरनल माइग्रेशन इन इंडिया : ए रीजनल एनालिसिज, द इंडियन जीयोग्राफिकल जरनल, जुलाई-सितंबर, 36: 106-121*